६. सागर और मेघ

I. प्रश्न उत्तर

प्र.१. सागर और मेघ से मानव - जाति को कौन से लाभ है ?

उ. सागर का पानी खारा होता है । इस से नमक बनाते है । इसमें मोती और रत्न मिलते है । हम नमक का रोज उपयोग करते हैं । समुद्र से मनुष्य मेहनत करके मोती और रत्न निकालते है सागर से बहुत मछलियाँ मिलती हैं । कई लोग मछलियों को आहार के रुप में लेते है । कुछ लोग केवल मछलियों को पकड़कर इसका व्यापार कर अपना जीवन बिताते है । सागर की भाप से ही मेघ बनकर बरसते है । इसमें पेट्रोलियम और गैस भी मिलती है । इन चीजों के उपयोग अनेक है । समुद्र में जहाज और नावें चलती है । यात्री एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा कर सकते है ।

मेघ समुद्र की भाप से बनकर आकाश में घूमते है और पानी बरसाते है । वर्षा से नदी, नाले, तालाब आदि सब पानी से भर जाते हैं । वर्षा के कारण पेड़ - पौधों की सिंचाई होती है । किसान बीज बोते हैं । बाँध बनाकर, नदियों का पानी, सिंचाई के काम में, पीने के काम में उपयोग किया जाता है । इससे बिजली का उत्पादन भी कर सकते हैं । पानी का उपयोग हर एक प्राणी के लिए है । वर्षा के आते ही सब का मन खुश हो जाता है । इस प्रकार सागर और मेघ से मानव जाति को अनेक लाभ है ।

प्र.२. सागर और मेघ ने एक - दूसरे में कौन - सी बुराइयाँ बतलायी ? पंद्रह पंक्तियों में उत्तर दीजिए ।

उ. सागर ने मेघ की बुराइयाँ इस प्रकार बतलायी कि तुम वज्र गिराकर सभी को कष्ट देते हो । उस वज्र की रचना के लिए तुम ने दधीचि की हत्या करवाई । तुम हत्यारे हो । तुम पानी मुझ से लेकर चोरी का काम करते हो । अंत में तुझे नीचे गिरकर मुझ ही में मिलना पड़ेगा । तुम मेरे मोती और रत्नों का मूल्य न जानने वाले मूर्ख हो । तुम कभी आकार में न होकर समय इधर - उधर घूमने वाले हो ।

मेघ सागर की बुराइयाँ बताते हुए कहता है कि - " तू खार की खान है ।" संसार भर से नीच । सारी पृथ्वी के विकार हो । तुम प्रलय मचाने वाले हो । मर्यादा का नाश कर हिंसा वृत्ति को अपनाने वाले हो । तुम्हारे हृदय में कंकड, पत्थर और शंक - घोंघे भरे हैं । तुम्हारे रत्न तो तुम्हे मथ कर कभी के देवताओं ने निकाल लिये । अब तुम इन्ही को रत्न समझ बैठे हो । तुम क्षण भर भी स्थिर नहीं रह सकते । तुम संसार को दलित करने वाले मनमाने का पक्ष क्यों न लेगा क्योंकि तू तो उन्हें छिपाता है । तू अत्याचारियों का संगी है । तू तो साठ हजार मूल्यों का द्रव है जो किसी का काम नहीं आता ।

प्र.३. सूरराज के शस्त्र का नाम क्या है ? वह किनकी हड्डियों से बना था ?

उ. सूरराज इन्द्र के शस्त्र का नाम वज्रायुध है । वह तपस्वी दधीचि की रीढ़ की हड्डियों से बना था । देवताओं की प्रार्थना पर मुनि दधीचि ने अपने प्राणों को त्यागकर हड्डियों को इन्द्र को

दान की थी । उन हड्डियों से ही वज्रायुध बना । उसीसे वृत्तासुर नामक राक्षस का वध किया जाता गया ।

प्र.४. बादल किस तरह के हृदयवालों से बात नहीं करना चाहता है ?

उ. बादल उन दुर्बल हृदयवालों से बात नहीं करना चाहता, जो कायरता और कापुरुषता को धर्म - भीरुता मानते है । ये गुण सागर में दिख पड़ते है । इसलिए बादल सागर से बात नहीं करना चाहता ।

I. वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

१. मोती - बहुमूल्य रत्न
सागर में मोती मिलते है ।

२. उच्चतम - सबसे ऊँचा
भारत में राष्ट्रपति का पद उच्चतम है ।

३. तपस्वी - तपस्या करनेवाला
मुनि वशिष्ठ महान तपस्वी थे ।

II. विलोम शब्द लिखिए ।

१.	स्वतंत्र	X	परतंत्र	५.	अमृत	X	विष
२.	दुर्बल	X	सबल	६.	याद	X	भूल
३.	नीच	X	उच्च	७.	यश	X	अपयश
४.	अन्त / इति	X	आदि	८.	आकाश	X	पाताल

III. निम्न वाक्यों को शुध्द कीजिए ।

	अशुध्द	शुध्द
१.	मेरे को एक रुपया दो ।	मुझे एक रुपया दो ।
२.	मैं ने बोला ।	मैं ने कहा ।
३.	वह उसके भाई के साथ खेलता है ।	वह अपने भाई के साथ खेलता है ।

IV. निर्देश के अनुसार काल बदलिए ।

१. मैं चार महीने सूर्य को विश्राम देता हूँ । **(भविष्य काल में बदलिए ।)**

उ. मैं चार महीने सूर्य को विश्राम दूँगा ।

२. मेरे हृदय में मोती भरे हैं । **(भूत काल में बदलिए ।)**

उ. मेरे हृदय में मोती भरे थे ।

३. मैं हत्यारों से बात नहीं करना चाहता । **(भविष्य काल में बदलिए ।)**

उ. मैं हत्यारों से बात नहीं करना चाहूँगा ।

V. पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

१. सागर - समुद्र, रत्नाकर

२. मेघ - बादल, जलद

३. नदी - सरिता , जलधारा

४. संसार - विश्व, जगत

५. सूर्य - प्रभाकर, दिनकर

VI. निम्न वाक्यों को सही क्रम में लिखिए ।

१. रत्न तुम इन्ही को बैठे हो अब समझे ।

उ. इन्ही को तुम अब रत्न समझ बैठे हो ।

२. भरे मोती है मेरे में हृदय ।

उ. मेरे हृदय में मोती भरे है ।

३. मूल्य नही रत्नों और मोती तुम मेरे का जानते हो ।

उ. तुम मेरे मोती और रत्नों का मूल्य नहीं जानते हो ।

VII. वस्तुनिष्ठ प्रश्न - उत्तर ।

१. " सागर और मेघ " पाठ के लेखक कौन है ?

उ. श्री राय कृष्णदास

२. सागर को..... भी कहते है ।

उ. रत्नाकर

३. मेघ आकाश में उमड़ - उमड़ कर क्या करते है ?

उ. वर्षा

४. मोती किससे बनते है ?

उ. वर्षा की बूँद से ।

५. नदियों पर बाँध बनाकर किसका उत्पादन किया जाता है ?

उ. बिजली

६. अपराधी के संगी कौन है ?

उ. सागर

७. सूरराजा के शस्त्र का नाम क्या है ?

उ. वज्र

८. खार की खान कौन है ?

उ. सागर

९. किसका शरीर बाष्प से बना है ?

उ. मेघ

१०. वज्र किनकी हड्डियों से बना है ?

उ. दधीचिकी

११. सागर में क्या चलती है ?

उ. नाव

१२. सूर्य किसको जलाता है ?

उ. सागर

१३. चार महीने कौन विश्राम करता है ?

उ. सूर्य

१४. इन्द्र का आयुध क्या है ?

उ. वज्रायुध

१५. सागर से रत्न निकालने के लिए कौन परिश्रम करते है ?

उ. मनुष्य

१६. दुर्बल हृदय वालों से कौन नही बात करना चाहता है ?

उ. बादल

१७. दधीचि की तपस्या किसने सफल की ?

उ. इन्द्र

१८. कायरता और कापुरुषता को सागर क्या मानता है ?

उ. धर्मभीरुता

१९. सागर को मथकर देवताओं ने क्या निकाला ?

उ. रत्न

२०. " सागर और मेघ " कैसा पाठ है ।

उ. वार्तालाप

***